<u>सन्देश</u>

गुरु नानक देव जी की 550वीं पावन जयंती के अवसर पर , मैं देश एवं विदेश में रह रहे सभी देशवासियों को, विशेष रूप से सिख समुदाय के भाइयों और बहनों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

गुरु नानक देव जी का जीवन और उनकी शिक्षाएं संपूर्ण मानवता के लिए प्रेम, करुणा, समता तथा भाईचारे का आदर्श प्रस्तुित करती हैं। अपनी सरल और सरस वाणी में उन्होंणने ज्ञान का प्रकाश फैलाया और ऊंच-नीच,जात-पांत की भावना तथा कर्मकांड से दूर हटकर 'सरबत दा भला' अर्थात् 'सभी की भलाई' हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने मानवता को 'नाम जपो, किरत करो और वंड छको' का महामंत्र दिया , जिसका अर्थ है : ईश्वर का नाम जपो , ईमानदारी और मेहनत से अपना काम करो और जो कुछ भी कमाई करो उसे लोगों के साथ मिल-बांटकर भोग करो। गुरु नानक देव जी ने समाज को महिलाओं का सम्मा-न करने और मेल-जोल से रहने का संदेश दिया। एक आदर्श गृहस्थस के रूप में , एक संत का जीवन जीकर उन्हों ने दुनिया को'कर्म' की श्रेष्ठकता की सीख दी।

आइए, इस शुभ अवसर पर , हम सब गुरु नानक देव के आदर्शों और शिक्षाओं को अपने जीवन में ढालकर , बराबरी और परस्प र सौहार्द पर आधारित समाज बनाने का संकल्पक लें।

******